इतिहास

एवरेस्ट नाम और तेन्जिंग नोर्गे की नागरिकता पर विवाद

तेन्जिंग शेरपा नोर्गे और एडमंड हिलेरी का नाम दुनिया में लोग जानते हैं. वैसे तो ये दोनों नाम परिचय के मोहताज नहीं हैं, लेकिन अभी इनसे जुड़ी कुछ और बातें चर्चा में हैं. क्योंकि २००३ एवरेस्ट विजय का स्वर्णजयंती वर्ष है. १९५३ में मई महीने की २९ तारीख को दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचने वाले ये दोनों पहले व्यक्तियों में से थे, जो पर्वतारोहण के इतिहास में पूरे संसार के लिए महत्वपूर्ण घटना थी. ब्रिटेन के लिए और भी गौरवपूर्ण बात थी, क्योंकि एक तो १९५३ की मई महारानी एलिजाबेथ का राज्याभिषेक का समय था, दूसरे इन दोनों एवरेस्ट विजेताओं ने पर्वतारोहण की ट्रेनिंग ब्रिटेन के विशेषज्ञों से ली थी, जबकि खुद ब्रिटेन के पर्वतारोही उसके पहले इस प्रयास में न केवल असफल हुए, बल्कि अपनी जान से भी हाथ धो चुके थे.

२९ मई को अविस्मरणीय बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोर-शोर से आयोजन हो रहा है. ब्रिटेन, अमेरिका और न्यूजीलैंड में स्वर्णजयंती समारोह की भारी तैयारी है. इसे विशिष्ट बनाने के लिए विश्व के विभिन्न हिस्सों से एक हजार से ज्यादा पर्वतारोही उतुंग शिखर के रास्ते में हैं, जिनकी योजना २९ मई को चोटी पर पहुँचने की है. खराब मौसम के कारण कई बार उन्हें वापस अपने शिविर में लौटना पड़ा है, लेकिन उनके हौसले में कोई कमी नहीं आई है. न्यूजीलैंड और अमेरिका में कुछ ज्यादा ही उत्साह है. तेन्जिंग शेरपा के साथ एवरेस्ट विजय करने वाले हिलेरी न्यूजीलैंड के थे और इनके बाद जिन दो पर्वतारोहियों के माथे पर इस सफलता का सेहरा बंधा, वे अमेरिकी थे. कुल्लो ताबेई को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है, जो १९७५ में एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली महिला थी. उन्होंने भी आने की स्वीकृति दे दी है. बाकई इस समारोह को ऐतिहासिक बनाने की योजना है. लेकिन एवरेस्ट के नाम और तेन्जिंग शेरपा की राष्ट्रीयता को लेकर कई ऐसे अप्रिय प्रसंग सामने आए हैं, जिससे इस मुद्दे ने राजनीतिक रंग पकड़ लिया है जो पूरे माहौल में खटास पैदा करने के लिए पर्याप्त है.

भारत-चीन-नेपाल की सीमा पर स्थित है एवरेस्ट, लेकिन विवाद में ब्रिटेन भी शामिल है, क्योंकि १९५३ में नेपाल का काफी कुछ ब्रिटेन के हाथ में था. भारत ने अपने को विवाद से दूर कर रखा है, लेकिन काठमांडू में दिल्ली को इसमें घसीटा जा रहा है. क्योंकि तेन्जिंग ने भारत की राष्ट्रीयता ले रखी थी और उन्होंने अपना सारा जीवन अमूमन वहीं गुजारा. नेपाल ने विश्व के इस गौरवशाली अतीत को भी राजनीतिक विवाद में आए दिन होने वाले उलटफेर से जोड़ दिया. यह तेन्जिंग का नहीं नेपाल का दुर्भाग्य है कि जो व्यक्ति विश्व के लिए विभूति है, उसे आज अपने ही देश की सरकार राष्ट्रीय विभूति मानने को तैयार नहीं है.

कई गैर सरकारी संगठन प्रयत्नशील हैं कि स्वर्णजयंती समारोह में तेन्जिंग शेरपा को राष्ट्रीय विभूति घोषित करके सरकार एक मिसाल प्रस्तुत करे, लेकिन राजनीतिक नेताओं ने दूसरा मोड़ दे दिया है. तेन्जिंग इसलिए नेपाल की राष्ट्रीय विभूति के हकदार नहीं हैं, क्योंकि किशोरावस्था (१९३२) से लेकर मृत्युपर्यंत (१९८६) वे भारत में रहे. यह अलग बात कि भारत की जमीन से चढ़ाई करने के बावजूद उन्होंने एवरेस्ट पर नेपाल का ही झंडा लहराया. लेकिन नेपाल ने उस समय भी इस विजय को उचित मान्यता नहीं दी और आज भी देने के पक्ष में नहीं है.

सीता का जन्मस्थल जनकपुर भी विवाद के घेरे में है, जो नेपाल में पड़ता है. १९५३ में जब तेन्जिंग एवरेस्ट से लौटे तो भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने उनका सम्मान किया. नेपाली मूल के शेरपा का भारत से सम्मान ग्रहण करना नेपालियों को उस समय अच्छा लगा था नहीं, इसका ब्यौरा तो नहीं मिलता, मगर आज नेपाली खबरचियों के बीच खुसुर-फुसुर है कि शेरपा को भारत से नागरिकता और पासपोर्ट नहीं लेना चाहिए था, जो पं. नेहरू ने उन्हें बतौर सम्मान प्रदान किया, शेरपा ने उसे स्वीकारा और दार्जिलिंग में रहने लगे. वहीं उन्होंने पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान खोला और मृत्यु के अंतिम क्षणों तक शिष्यों में आवश्यक निर्देश देते रहे.

नेपाल में जिन हस्तियों को राष्ट्रीय विभूति का दर्जा दिया गया है, उनमें महात्मा बुद्ध भी हैं, क्योंकि वे जहाँ पैदा हुए वह लुम्बिनी नेपाल में है. लेकिन उन पर तेन्जिंग वाला पैमाना लागू नहीं होता, जबकि बुद्ध को भारत में ही दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे वे बुद्ध कहलाए, उनका महापरिनिर्वाण भी यहीं हुआ, मगर उन्हें दिव्यज्ञान देने वाला कोई राजनीतिक व्यक्ति नहीं था,




तेन्जिंग शेरपा नोर्गे

शायद इसीलिए नेपाल सरकार ने बुद्ध को राष्ट्रीय विभूति मान लिया. इसके धार्मिक कारण भी रहे होंगे. वैसे बुद्ध हमेशा से भारत में राजनीतिक विवाद के केंद्र रहे हैं, लेकिन तेन्जिंग के साथ ऐसा नहीं सुना गया.

तेन्जिंग शेरपा के पुत्र जाम्लिंग तेन्जिंग नोर्गे स्वदेश में ही अपने पिता के प्रति इस रवैये से दुखी हैं. पिछले महीने वे दिल्ली आए और इस लेखक के साथ बातचीत के दौरान सिर्फ इतना कहा - 'नेपाल सरकार उन्हें नेपाली के रूप में मान्यता दे, यह भारत और नेपाल दोनों के लिए एक सुखद अनुभूति होगी. वह वर्ष उसके लिए उपयुक्त अवसर भी है. आखिरकार मेरे पिता पैदा तो हुए नेपाल में और ठीक एवरेस्ट के नीचे. भारत में रहकर भी उनकी आत्मा नेपाल में ही बसती थी. सबसे ज्यादा उन्होंने शेरपाओं को चढ़ाई के गुर सिखाए. इसलिए सम्मान

जैसे-

जैसे स्वर्णजयंती समारोह की तारीख करीब आती जा रही है, शेरपाओं द्वारा संचालित नेपाल पर्वतारोहण संघ ने तेन्जिंग को राष्ट्रीय विभूति घोषित करने की अपनी मांग तेज कर दी है. इस मांग को तकरीबन सत्तर हजार शेरपा आबादी का समर्थन है जो प्रतिवर्ष पर्यटकों के जरिए सात हजार डॉलर से ज्यादा देश की राष्ट्रीय आय में योगदान करते हैं.

में राष्ट्रीयता कोई अड़चन नहीं है. जाम्लिंग ने बाकी सवालों का जवाब टाल दिया.

जैसे-जैसे स्वर्णजयंती समारोह की तारीख करीब आती जा रही है, शेरपाओं द्वारा संचालित नेपाल पर्वतारोहण संघ ने तेन्जिंग को राष्ट्रीय विभूति घोषित करने की अपनी मांग तेज कर दी है. इस मांग को तकरीबन सत्तर हजार शेरपा आबादी का समर्थन है जो प्रतिवर्ष पर्यटकों के जरिए सात हजार डॉलर से ज्यादा देश की राष्ट्रीय आय में योगदान करते हैं. पिछले पचास वर्षों में १६०० पर्वतारोही एवरेस्ट पर पहुँच चुके हैं जिनके रहने-ठहरने की सारी व्यवस्था शेरपाओं ने की. इस वर्ष अमेरिका से आए पर्वतारोहियों में १४ विकलांग भी हैं, जो ५२४८ मीटर की ऊँचाई तक पहुँच चुके हैं.

राष्ट्रीय विभूति को लेकर चल रहा झमेला अभी सुलझा नहीं कि एक और विवाद छिड़ गया, जिसकी शुरुआत चीन ने की है और उसमें ब्रिटेन ने भी अपनी नाक घुसेड़ दी है. यह सब भी स्वर्णजयंती समारोह में ही तय होना है. एवरेस्ट पर चीन अपना दावा काफी समय से भारत और नेपाल से ज्यादा ऊँची आवाज में ठोकता रहा है. उसी के तहत उसने एवरेस्ट विजय के थोड़े ही दिनों बाद तिब्बत पर कब्जे को सही ठहराया था. अब उसने एक नया शिगूफा छोड़ा है. चीन ने एवरेस्ट के नए नामकरण के लिए अभियान छेड़ रखा है. चीन के सरकारी अखबार चाइना डेली में छपे एक विवरण के मुताबिक इसका नाम माउंट छोमोलांग्मा होना चाहिए, क्योंकि चीन के छिंग शासकों ने सर्वप्रथम १७९७ में इसकी चोटी का नक्शा तैयार किया था. इसी आधार पर तिब्बत पर चीन का आधिपत्य सही है. जबकि एवरेस्ट नाम ब्रिटेन का दिया हुआ है. लंदन के रिकार्ड के मुताबिक जैसा कि वहाँ के अखबार डेली टेलिग्राफ का कहना है कि १८५२ में जॉर्ज एवरेस्ट भारत में सर्वेयर जनरल थे, जिन्होंने एवरेस्ट का सबसे पहले नक्शा तैयार किया. इसलिए उन्हीं के सम्मान में १८६५ में इस चोटी का नाम एवरेस्ट रखा गया. नेपाली इसे सागरमाता या आकाश की देवी कहते हैं. यह नाम पहली बार १९५३ में सामने आया, जब नेपाल में तेन्जिंग को तारा पदक दिया गया, जो कोई बहुत बड़ा सम्मान नहीं माना जाता. लेकिन नेपाल को गर्व है कि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में तेन्जिंग को नेपाली मूल का बताया गया है. तिब्बती एवरेस्ट को विश्वमाता बताते है. भारत हालाँकि इस नाम के विवाद में नहीं है, लेकिन यहाँ तो हिमालय की मान्यता है, तिब्बती में एवरेस्ट की चोटी का नाम है छोमोलुंग्मा जिसका अर्थ है पूरे विश्व की माता. लेकिन, सबसे बड़ा कटु सत्य तो यह है कि कुल मिलाकर नेपाल के लोग एवरेस्ट को निधि और इस पर पहली विजय हासिल करने को अपनी विजय समझते हैं, लेकिन प्रथम विजेता का भारत प्रेम देखकर उन्हें उचित सम्मान के योग्य नहीं मानते.

अमेरिका में राष्ट्रीय भूगोल समाज की ओर से स्वर्णजयंती समारोह के अवसर पर विशाल प्रदर्शनी लगाई गई है, जिसमें हिलेरी शामिल होंगे जो अब ८३ वर्ष के हो चुके हैं. इस प्रदर्शनी में एवरेस्ट चढ़ाई में पिछले ५० वर्षों में कीर्तिमान स्थापित करने वालों की झाँकी प्रस्तुत की गई है. एवरेस्ट चढ़ाई की अब तक की सारी सफलताओं का श्रेय लेने वाले ब्रिटेन के दो पर्वतारोही १९२४ में ८७१०.५ मीटर की ऊँचाई के आधे पर पहुँचते-पहुँचते ही लापता हो गए, १९५३ के रिकार्ड के दस साल बाद दो ब्रितानियों का और मई १९७८ में दो अमेरिकियों का बिना ऑक्सीजन सिलिंडर के चोटी पर पहुँचना इस प्रदर्शनी में उल्लेखनीय है.

❖ मयंक शेखर